eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

वेदो मे संगीत तत्व

[1]डा0 दीपाली श्रीवास्तव
[1]सह प्रोफेसर, (संगीत विभाग) महिला महाविद्यालय पी0जी0 कालेज कानपुर, उ0प्र0

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

ओउम परमात्मा से 4 वेदो का प्रकाश ऋषियो पर हुआ। उन्ही चार वेदो मे समावेद से संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है। भारतीय संगीत की परंपरा युगो –युगो से बहती आ रही है। भारतीय संगीत की लोकप्रियता मे कोई अन्तर नही आया है। कारण यही है कि भारतीय संगीत हमारी अनुपम विरासत है। जिसमे वैदिक युगीन तप व ऋषि मुनियो की साधना का वह अथाह समुद्र निरन्तर गतिशील है। भारतीय वेद हमारी सभ्यता व संस्कृति के अमूल्य घरोहर है। हमारी भारतीय संगीत की सार्व भौमिकता व ज्ञान का अतुल्य भण्डार है। भारतीय वेदो मे ग्रह नक्षत्र, देवी देवता, यज्ञ, मंत्रोच्चारण, गीत – संगीत, नृत्य, योग, तप आदि का समावेश है। हमारे वेद और संगीत एक – दूसरे के पूरक है। वेद भारतीय संस्कृति के मूलाधार है।

मुख्य शब्द– वेद, संगीत तत्व, संगीत की सार्व भौमिकता, हमारी सभ्यता व संस्कृति।

Introduction

भारतीय संस्कृति मे ज्ञान, विज्ञान, कला, शास्त्र, धर्म सबका मूल वेद ही है। वैसे तो वेदन चतुपटई मे सामवेद का स्रोत की दृष्टि से विशिष्ट स्थान है, किन्तु साम के अतिरिक्त ऋक, यजुर्वेद तथा अर्थवेद मे भी संगीत का उल्लेख पाया जाता है। वेद भारतीय संस्कृति के मूल आधार है। इन्हे ज्ञान –विज्ञान का विश्वकोष कहा जाता है। समस्त भारतीय ज्ञान विज्ञान कलाओं का मूल एवं ज्ञान का भण्डार वेद ग्रन्थो मे समाहित है। भारतीय विद्वानो मतानुसार प्राचीनतम एवं आध्यात्मिक ग्रन्थ वेद – ग्रन्थ है। स्कन्ध पुराण मे कहा गया है।

स्कन्ध पुराण वन्त विपुलमतिदं वेद वेदान्त वेधं
श्रेष्ठशान्तं शमतिविषयं शुद्वतेजो विशालम्
वेदव्यासं सततविनयं विश्वेधेकेयानिं
पाराशर्य परमपुरूष सर्वदाहं नममि(1)

मंत्र संहिता वेदामिधा।। मंत्र सहिंता का वेद है। सहिंता, ब्रम्हण, उपनिषाद, आयुवेद, नाद्रयशस्त्र, कोश, कल्प और मनुस्मृति के आधार पर ज्ञात होता है। वेद शब्द विदा धतु से बना है। इसका प्रयोग विद, सतायाम, विदज्ञाने, विद्वाग्रचारणे चारणे तथा विदलृ लाभे अर्थो मे होता है। ये विविध अर्थवेद की बहुविध उपलब्धियों का संकेत देते हैं। जीव और पदार्थ की सतृ प्रवृत्ति का अन्वेषण सता है। आज भी दर्शन की अनेक शाखाएं फूटी हैं। जो कुछ अनुभूत था दृष्ट है, उसका स्मृति और मति संचित

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

भाग्य ज्ञान है। विचार आगत, अनागत , काल और देश मे स्थित सतृ के संधन निर्मित मन का विशिष्ट संचरण है।

विर्दान्त जानन्ति, विधन्ते भवन्ति, विदन्ति अथ्वा विदन्ते लभन्ते विदन्ते विचारयति
सर्वे मनुष्या (2) सत्यविधये वैयैषु वा तथा विदासस्च भवन्ति वेदा !

अर्थात् जिनसे सभी मनुष्य सत्यको जानते है। अथवा प्राप्त करते है या विचारते है। अथवा विद्वान होते है। अथ्वा सत्य विद्या की प्राप्ति के लिये जिनमे प्रस्तुत होते हैं व्र व्रद है। अतः वेद का महत्व किसी से छिपा नही है। वेद वह दिव्य ज्ञान आगार है जिसे पढकर विदेशी भी इसके समक्ष नमस्तक हो जाते है। वस्तुतः वेद है ही ऐसी गौखमयी वस्तु आध्यात्मिक आधिदैविक और अधिभैतिक सथी प्रसारसे ज्ञान भंडार को अपने भीतर सजोए नित नवीन प्रकाश देने मे वे आज भी उतने ही समक्ष हैं। जितने आज से पहले थे।

पावगी महोदयने लिख – कि वेद सम्पूर्ण ज्ञान का आदि स्त्रोत हैं। ईश्वरीय ज्ञान का प्रधान आधार हैं। इतना ही नही दिव्य बुद्धि और सत्समय सारयुक्त वाक्यो का महान भण्डार हैं।

" The vede is the fountain head of knowledge, the drime sources of inspirationary the grand repository of Pithy Passeges of divine wishdom and eternal truth."(2)

अर्थात् संगीत का मुख्य संबंण सामवेद से है। किन्तु ऋग्वेद मे भी संगीत विषयक सामग्री विद्यमान है। ऋग्वेद मे स्वर के उदात्त अनुदत्त स्वरित भेद पाये जाते है। वेदो मे स्वर का अर्थ उदात्त आदि स्वरोच्चारण विधि भी है। वेद पाठ मे उदात्त, अनुदत्त और स्वरित की उच्चारण विधि पर बहुत बल दिया जाता है। उसके उच्चाण की शुद्धता को सुरक्षित रखने के लिये उसके साथ हस्तचालन के सहचर्य का नियम वेद पाठ मे अभी तक चला आ रहा है। यद्यपि ऋग्वेद संगीत का ग्रन्थ नही है, तथापि उदात्त स्वरित इत्यादि स्वर धर्मो से उच्चारित होने से पाठ मधुर संगीतमय लगता है। ऋग्वेद के मात्र संगीतमय है और सस्वर पाठ करने के लिये उक्त स्वर धर्मो का प्रयोग होता है।

ऋग्वेद का स्वरांकन– वेद मे उदात्त आदि स्वर धर्मो का इतना महत्व था कि भ्रांति न होने के साथ हस्तसंचालन की प्रकिया भी निर्धारित करदी गई जिससे उनके उच्चारण मे कोई अशुद्धि या भ्रांति न होने पाये। वेद का स्वराकन संसार का सबसे प्राचीन स्वराकन है। इन्ही तीन स्वरो कू द्वारा वेद का पाठ गान प्राय बन जाता है। अर्थात् बिल्कुल गान तो नही किन्तु गान जैसा लगता है, वेद मंत्रो की वह अवस्था है जो कि सर्वथा गान है न उसकी गान जैसी भाषा ।

ऋग्वेद मे संगीत विषयक सामग्री– इस ग्रंथ मे संगीत संबंधी प्रचुर सामग्री मिलती है। ऋग्वेद मे गीत के लिये गीर, गातु, गायेत्र तथा साम शब्दो का प्रयोग किया जाता है। ऋ्वेद की ऋचाये स्वरावलियो मे निबऋ होने पर स्त्रोत कहलाती है। ऋग्वेद मे गीत वाा तथा नृत्य तीनो का पगचलन दृष्टिगोचर होता है। ऋग्वेद मे 1028 सूक्त अर्थात् अलग–अलग देवताओ के लिये की गई प्रार्थनाएं आती हैं। ऋग्वेद के सूक्त के छन्दो मे बंधे हुये अर्थात् पद्यात्मक है। इनमे निहित ऋचाओ या मंत्रो को विशिष्ट स्वरो मे गाने की प्रथा थी। ऋग्वेद मे गीत तथा वाद्य के साथ नृत्य कला का प्रचुर अस्तित्व पाया

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

जाता है। नवोदित उषा की स्वर्णिम आभा को देखकर वैदिक ऋषि को सुसज्जित नर्तकी के विम्ब्रम का स्मरण हो जाता है। नृत्य कला कुशल तथा यौवन संपन्न नारी की भाँति उषा का अंगाभिनय मुग्धकारी बताया जाता है। नृत्य का कार्यक्रम खुले प्रांगण मे तथा उन्मुक्त वातावरण एकत्रित जनता के सम्मुख होता था। जिससे नर – नारी दोनो भाग लेते थे। ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र मे विविध लोक नृत्यो का उल्लेख पाया जाता है। प्राचा आगाम नृत्ये हसाय (10183 ऋग्वेद)

ऋग्वेद मे संगीत– यजुर्वेद उन मंत्रो का संकलन है जिनका गायन यज्ञादि पर कर्मकांड के लिये होता था। यज्ञो के विस्तृत कार्य के सम्पादन मे श्रम विभाजन तत्वो को लेकर चार स्वतंत्र ऋत्विजो की आवश्यकता मानी गयी, जिनको क्रमशः अहवार्यु, उद्रगाता ब्रहम कहते थे। यज्ञ के कार्यो का संचालन अहवर्यु नामक ऋतुज के द्वारा किया जाता था। यह यजन कर्म जिन लोगो के द्वारा किया जाता है, उन्ही का सेकलन यजुर्संहिता मे हुआ ।

सेम भागो मे ऋक, यर्जु तथा साम तीनो प्रकारो के मंत्रो का अनिवार्य स्थान है। अंतर यह है कि यर्जु का केवल उपांशु का उच्चारण किया जाता है। यद्यपि संगीत के विकास की दृष्टि से यजुर्वेद का कोई महत्व परिलक्षित नही होता, तथापि प्राचीन संगीत विषयक परिस्थितिक जानने के लिये तदन्नरित उल्लेख कम उपकारक नही। यजुर्वेद मे सामगायक का सर्वप्रधान स्थान है। अनेक वाद्यो का उल्लेख भी इनमे आता है। जैसे वीणा, वाण, तुणव, दुदुंभी, शंख तथा तलब आदि। वीणा के महत्व का गान यजुर्वेद मे मिलता है। वीणा राजलक्ष्मी का साक्षात् अवतार मानी गई तथा यजमान की श्री एवं समृद्धि की द्योतिका मानी गई थी ।

उस समय की महिलाओ मे संगीत कला कौशल भरपूर पाया जाता है। उच्च वर्ग की महिलाओ को माना तथा वाद्य की शिक्षा दी जाती थी और निम्न कुल की महिलाओ को लेक नृत्य आदि सतारोह पर आमंत्रित किया जाता थां सिर पर कलश लेकर एक से अधिक नर्तकिया वर्तुलाकार नृत्य करती थी और मुंह से गीत के चरणो को गाती थी। यजुर्वेद काल विशेष यज्ञादि का उत्कर्ष काल है।

अथर्ववेद मे संगीत– वेद चतुष्टयी मे अथर्ववेद का विशिष्ट स्थान है। अथर्ववेद के अनेक मंत्रो मे साम के पांच विभाग हिंकार प्रस्तार आदि का वर्णन मिलता है। सामगान अथर्वकाल मे समृद्धि को पहुंच चुका था एवं विविध क्रिया कार्मो मे उसका विशिष्ट उपलब्ध स्थान था। पितृो की ईष्टापुर्ति मे समागान का गायन होता था। वाद्यों मे आद्यात कर्करी तथा दुदुंभी का उल्लेख है कि दुदुंभी का निर्माण काष्ठ से किया जाता था। उसके मुख को चारो ओर से चर्म की बादियो को सुरक्षित एवं मजबूत करने के लिये तेल का लेपन किया जाता था।

सामवेद मे संगीत– चारो वेदो मे प्रत्येक का अपना महत्व है। परन्तु समावेद का महत्व सर्वोपरि है। ऋ्वेद वाणी के तुल्य है, यजुर्वेद मन के तुल्य है बऔर साम प्राण के तुल्य है। अतः साम की वही महिमा है जो प्राणी के देह की महिमा है। इसप्रकार सामवेद पुर्णतः संगीतमय है। सामवेद की महत्ता सभी वेदो ने स्वीकारी है। सामवेद अपने भाव के पदो को ऋ्वेद से लेता है। सामवेद मे बहुत कम

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

ऐसे पद है जो अपने है। अर्थात् जो ऋ्वेद की ऋचाओ पर आश्रित नही है। माटे तौर पर सामवेद संहिता को आर्चिक कहते है। इसका अर्थ है जो ऋ्वेद की ऋचाओ से सम्बद्ध है। असको दो भाग है। पहला पूर्वार्चिक दूसरा उत्तरार्चिक एवं आरण्यक संहिता भी है। इनमे गेय मंत्रो का संग्रह मात्र है। अब हम सामगीत के बारे मे उल्लेख करना चाहेगे। इसके प्रायः पाँच भाग होते है। ये पाँच भक्तियाँ कहलाती है। ये पाँच भाग इस प्रकार है। 1. हुकार अथवा हिंकार 2. प्रस्ताव 3. उद्गीत 4. प्रतिहार 5. निधन ।

साम के गायक तीन होते है। प्रस्तोता , उद्गाता, प्रतिहर्ता मुख्यगायक होता है। प्रस्तोता प्रतिहर्ता उसके सहायक होते है। प्रस्तोता, उद्गाता और प्रतिहर्ता तीनो मिलकर हुकंर स्वर मे उच्चारण करते है, इसमे वेद प्रारंभक स्वर भरते है। इसके बाद प्रस्तोता सामगीतो के प्रस्ताव भाग को ओंकार के सहित गाता है। मंत्र या गीत के आरंभ के भाग को प्रस्ताव कहते है, इसके बाद उद्गाता गीत गाता है, उद्गात गीत का मुख्यतयः अधिकांश भाग होता है। उद्गाता का अर्थ है ऊचा गाने वाला। प्रायः उद्गात भाग उच्चस्वरो मे होता है। इसके बाद प्रतिहर्ता उद्गीती के अंतिम पद से गान को पकड लेता है और प्रतिहर्ता गान को लेकर चलता है। प्रतिहर्ता का अर्थ ही इस प्रसंग मे है। (आकर मिल जाने वाला) अंतिम भग को निधन कहते है। इसका शाब्दिक अर्थ हुआ नीचे रख देना अर्थात् गीती का अंतिम भग अर्थात् उपसहार निधन भाग को प्रस्तोता उद्गाता एवं प्रतिहर्ता तीनो एक साथ ओम का स्वरोच्चार करते है।

ऋ्वेद के छंदमय मंत्रो का गायन ही समागायन कहलाया, इन्ही मे गेय ऋचाओ का संग्रह समवेद है। समवेद का गान परम्परागत रूप से वैसा ही चला आता है जैसा कि वह आदि मे था । समवेद के काल मे स्वर सप्तक पूर्वतः विकाति हो चुका था। साम ग्राम का सप्तक इस प्रकार है।

1. कुष्टा 2. प्रथमा 3. द्वितीय 4. तृतीय 5.चतुर्थ 6. मंद्र 7. अतिस्वार
   ये ग्राम अवरोही क्रम का था । साम वेद कुष्ट प्रथम द्वितीय इत्यादि जो स्वर थे उनका षडज ऋषभ गांधार अत्यादि लौकिक स्वरो से कोई मेल था या नही ये समझने के लिये नारदीय शिक्षा के निम्नलिखित श्लोको से सहायता मिलती है।
   "यस्मागानं प्रथमस्रत वेणेर्मध्यमः स्वरः
   यो क्षितीयस्य गाधरे तृतीयस्सत्वृशमः स्मृतः
   चतुर्थषड्ज इत्याहुः पंचमो धैवतो भवेत्।
   पष्टो निषादो विज्ञेयः सप्तमः पंचमः स्मृतः"(3)

इसका अर्थ है कि साम गान का प्रथम स्वर है वह वेणु वंशी का मध्यम स्वर है, जो उनका द्वितीय स्वर है वह वेणु का गांधार है, जो उनका तृतीय स्वर है वह वेणु का ऋषभ है, जो उनका चतुर्थ स्वर है वह वेणु का षडज है, जो उनका पंचम स्वर है वह वेणु का धैवत है, जो उनका

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

छठा स्वर है वह वेणु का निषाद है और जो उनका सातवां स्वर है वह वेणु का पंचम स्वर है। अर्थात् नारदीय शिक्षा के अनुसार सामगान का रूप इस प्रकार होगा।

म ग रे सा नि ध प	प्रथम – मध्यम(म)
द्वितीय– गांधार (ग)	तृतीय – रिषभ (रे)
चतुर्थ – षडज (सा)	पंचम – धैवत (ध)
षष्ठी – निषद(नि)	सप्तम – पंचम (प)

अन्य वेदो की भँति सामवेद मे भी निम्न वाद्यो के उल्लेख परये जाते है। काष्ठवीणा, किचौल, दुदुंभी इत्यादि। कुछ विद्वानो का मत है कि पहले सामगान के समय भूमि उडुंभी इत्यादि वाद्य भी बजते थे।

इस प्रकार भररतीय संगीत के सभी ग्रंथकार इस बात को दोहराते है कि हमारे समस्त सगीत का बीज साम मे है। ऋक, यर्जु, अर्थव वेदो मे तत, घन, सुषिर, अवनद्ध सभी प्रकार के वाद्यों का उल्लेख मिलता है मूल रूप से वैदिक काल मे संगीत का अध्यात्मिक रूप ही प्रखर था, इस प्रकार सामवेद का प्राचीन की दृष्टि से विशिष्ट स्थान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.संगीत शिक्षण के विविध आयाम(पु) पृ0 संख्या 40
2.सांस्कुतिक शिक्षा के उद्रविकास मे संगीत का योगदान (पु) पृ0 संख्या 21
3.सांस्कुतिक शिक्षा के उद्रविकास मे संगीत का योगदान (पु) पृ0 संख्या 28
4. भरतीय संगीत का इतिहास (पु) पृ0 संख्या 128